2 सितम्बर 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 11 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

राजस्थान के मुख्यमंत्री द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान

जयपुर (राज.) : यहाँ रामनिवासबाग स्थित रविन्द्रमंच सभागृह में संस्कृत दिवस के अन्तर्गत राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान समारोह-2019 का आयोजन दिनांक 14 अगस्त को किया गया, जिसके अन्तर्गत अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री, शताधिक पुस्तकों के लेखक, अन्तरराष्ट्रीयख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संस्कृत के विकास में उल्लेखनीय योगदान हेतु संस्कृत शिक्षा विभाग-राजस्थान सरकार द्वारा विद्वत्पुरस्कारों के अन्तर्गत **'संस्कृत साधना सम्मान'** से राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा 51 हजार रुपये की राशि से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को सम्मानित किया गया। साथ ही शॉल, श्रीफल व प्रशस्ति-पत्र भी भेंट किया गया। राज्य के शिक्षा मंत्री श्री सुभाष गर्ग ने डॉ. भारिल्ल के योगदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

डॉ. भारिल्ल को प्रशस्ति-पत्र भेंट करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत। साथ में हैं - संस्कृत शिक्षा मंत्री सुभाष गर्ग, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, शिक्षा मंत्री गोविन्द गोटासरा, पूर्व संस्कृत शिक्षा मंत्री बृजकिशोर शर्मा, विधायक अमीन कागजी व आरिफ खान आदि।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर से रविवार 20 अक्टूबर, 2019 तक)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित उक्त शिविर में विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन किया जायेगा। अतः अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक स्वर्ण अवसर होगा।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

नोट : कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

संपर्क - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय –

पंचकल्याणक : पाषाण से परमात्मा बनने की प्रक्रिया

3

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एक साधु था, उसने भिक्षा में माँग-माँगकर सौ मुहरे खरीदीं और वह उन्हें गुदड़ी में छिपाकर सीने से लगाकर रखता। चोरी के भय से अपने शिष्य से कहता – गंगाराम जागते रहना, गंगाराम की समझ में नहीं आता; गुरुजी मुझे रात को सोने क्यों नहीं देते? इन्हें क्या डर है? एक दिन उसने गुदड़ी खोली, उसमें 100 मुहरे छिपी थीं, उस निर्मोही शिष्य ने उन्हें गुदड़ी में से निकाल कर पास के कुएं में डाल दिया और जब मोही गुरुजी ने कहा – जागते रहना गंगाराम तो गंगाराम ने कहा – ''गुरुजी अब निश्चिन्त सो जाओ। आपका डर मैंने कुएं में डुबो दिया। वह साधु मुहरों से नहीं, उनके मोह से बैचेन था, अत: मोह ही परिग्रह है।

यदि अकेले रुपयों-पैसों को ही परिग्रह मानेंगे तो जिन भिखारियों के पास पैसा नहीं और पशुओं के पास तो पैसा है ही नहीं तो क्या वे इस पाप से मुक्त हैं? नहीं; क्योंकि ममत्व तो उनमें भी असीमित है। अत: **पैसे में ममत्व का त्याग ही अपरिग्रह है।**

अपने भावों की विशुद्धि के लिए इस भोग सामग्री का भी त्याग तो करना ही चाहिए और प्राप्त धन-धान्य आदि को सत्कार्यों में खर्च करना चाहिए। यह बात जुदी है कि सत्कार्यों की परिभाषा क्या हो?

जिनागम में तो छह खण्ड का वैभव होते हुए भी ममत्व परिणाम न रहने से भरतजी को घर में ही 'वैरागी' की संज्ञा प्राप्त थी। इससे स्पष्ट है कि पैसा होना परिग्रह पाप नहीं है, बल्कि उसमें ममत्व ही परिग्रह पाप है। इसका अर्थ यह हुआ कि वस्तुत: मिथ्यात्व आदि अंतरंग परिग्रह ही सबसे बड़ा पाप है, जिसे लोग पाप में ही नहीं गिनते।

अंतरंग परिग्रह 14 प्रकार के हैं – (1) मिथ्यात्व, (2) क्रोध, (3) मान, (4) माया, (5) लोभ; (6) हास्य, (7) रति, (8) अरति, (9) शोक, (10) भय, (11) जुगुप्सा, (12) स्त्रीवेद, (13) पुरुषवेद और (14) नपुंसक वेद – ये 14 भेद अंतरंग परिग्रह हैं।

अब हम जरा सोचें, विचार करें कि क्या हम हंसने को कभी परिग्रह पाप मानते हैं, पत्नी से-पुत्र से-परिवार से रति अर्थात् राग करने को, प्रेम करने को, परिग्रह पाप मानते हैं। जबकि ये ही यथार्थ परिग्रह पाप हैं। यद्यपि इनके त्याग बिना केवल बाह्य परिग्रह के त्याग की धर्म के क्षेत्र में कुछ भी कीमत नहीं है; फिर भी परिणामों की विशुद्धि के लिए परोपकार की भावना से प्राप्त अर्थ का सदुपयोग अच्छे कार्यों में करना ही चाहिए। दान की परिभाषा में कहा भी है –

'अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्'

धन उस कुएं की झर की तरह है, जिससे दिनभर कितना भी पानी खर्च कर दो, रात में कुआं प्रतिदिन अपनी झरों के द्वारा उतना ही पानी भरता ही रहता है। यदि उस पानी को नहीं निकालेंगे तो वह पानी तो सड़ ही जायेगा और नया पानी आना भी बंद हो जायेगा। अत: –

पानी बाड़े नाव में, घर में बाड़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए यही सयानो काम।।

धन की केवल तीन गतियाँ होती है – दान-भोग और नाश, जो व्यक्ति प्राप्त धन का न दान देते हैं, न भोग करते हैं, उनका धन नियम से नष्ट हो जाता है।

दानं भोगं नाशं, तिस्त्र: गतय: भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुक्ते तृतीयोगति भवति तस्य।।

सत्कार्यों का क्षेत्र बहुत व्यापक है, जिसका दातार ही अपनी दृष्टि के अनुसार निर्णय करते हैं, चार प्रकार के दानों में ज्ञानदान को जिनागम में सर्वश्रेष्ठ माना है। प्यासे को पानी पिलाने से हम उसका 4 घंटे का दु:ख दूर करते हैं, भूखे को भोजन देकर 8 घंटे की आकुलता कम करते हैं, रोगी को औषधि देकर 4-6 माह का दु:ख दूर करते हैं और अज्ञानी को तत्त्वोपदेश देकर हम उसके जन्म-जन्मान्तर सुधार सकते हैं। अत: यथाशक्ति सभी दान करना चाहिए।

अत: सभी बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि भाग्य से प्राप्त धन को अच्छे कार्यों में खूब खर्चकरो।

जैन साधु दिगम्बर क्यों होते हैं

यहाँ 'दिगम्बर' शब्द का अर्थ है – दिशायें ही अम्बर (वस्त्र) जिनके, वे साधु दिगम्बर कहलाते हैं। वे वस्त्र पहनते ओढ़ते नहीं है। जैन साधु पाँचों इन्द्रियों के विषयों से विरक्त और सभी प्रकार के आरंभ परिग्रह से रहित ज्ञान-ध्यान व तप में निमग्न रहते हैं, इस कारण वे नग्न ही रहते हैं, दिगम्बर ही रहते हैं। धरती उनका बिछौना एवं आकाश उनका उड़ौना होता है।

दिगम्बर मुनियों के हृदय में सब जीवों के प्रति पूर्ण समता भाव होता है। उनकी दृष्टि में शत्रु-मित्र, महल-मसान, कंचन-काँच, निन्दा-प्रशंसा आदि में कोई अन्तर नहीं होता। वे पद पूजक व अस्त्र-शस्त्र प्रहारक में सदा समता भाव रखते हैं।

जैन साधु पूर्ण स्वावलम्बी और स्वाभिमानी होते हैं, उन्हें किंचित् भी पराधीनता स्वीकृत नहीं हैं, एतदर्थ दिगम्बरत्व अनिवार्य है। सवस्त्र कभी पूर्णरूपेण स्वावलम्बी नहीं रहा जा सकता। वस्त्रों के साथ कितनी पराधीनता है – यह बात किसी भी वस्त्रधारियों से छिपी नहीं है। अतः जैन साधु नग्न दिगम्बर ही होते हैं।

जब अर्द्धरात्रि में सारा जगत मोहनींद में सो रहा होता है। अथवा विषयावासनाओं में मग्न होकर मुक्ति के निष्कंटक पथ में विषकंटक वो रहा होता है, तब जैन साधु-दिगम्बर मुनि अनित्य अशरण आदि बारह भावनाओं के माध्यम से संसार, शरीर व भोगों की असारता का एवं जगत के स्वरूप का चिन्तन-मनन करते हुए आत्मध्यान में मग्न रहने का पुरुषार्थ करते रहते हैं। काम-क्रोध, मद-मोह आदि विकारों पर विजय प्राप्त करते हुए अपना मोक्ष मार्ग प्रशस्त करते रहते हैं।

ऐसे आत्म साधक जैन साधु नवजात शिशुवत अत्यन्त निर्विकारी होने से नग्न ही रहते हैं। उनकी नग्नता निर्विकार की सूचक है बालक वत् उन्हें वस्त्र धारण करने का विकल्प ही नहीं आता, आवश्यकता ही अनुभव नहीं होती। जिस तरह काम वासना से रहित बालक माँ-बहिन के समक्ष लजाता नहीं हैं, शरमाता नहीं है, संकोच भी नहीं करता। माँ-बहिनों को भी उसे नग्न देखने से, गोद में लेने से, अपना स्तनपान कराने से भी संकोच नहीं होता, लज्जा नहीं आती; ठीक इसी तरह निर्विकारी मुनिराजों को भी लज्जा नहीं आती। उनके दर्शन से भक्तों को भी कोई संकोच नहीं होता। फिर बिना प्रयोजन जैन साधु वस्त्रों का बोझा क्यों रखें। इस शरीर के लिए परिग्रह की पोटली क्यों बाँधे। उन्हें धोने आदि का हिंसोत्पादक पापारंभ क्यों करें?

जैनदर्शन के अनुसार जैन साधु की निर्मल परिणति में छठवें-सातवें गुणस्थान की सर्वोच्च-सर्वश्रेष्ठ भूमिका होती है, जिसमें अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया व लोभ कषायों का अभाव हो जाता है, अतः इस भूमिका में वस्त्रग्रहण करने का भाव ही नहीं आता। यदि कोई बलात् पहना दें तो वे उसे उपसर्ग (आपतित संकट) मानकर उस उपसर्ग के दूर न होने तक खान-पान का त्याग कर देते हैं।

संज्वलन क्रोध-मान माया लोभ कषाय के सिवाय अनन्तानुबंधी आदि उपर्युक्त तीनों कषायों की चौकड़ी का अभाव हो जाने से उनके पूर्ण निर्ग्रन्थ दशा प्रगट हो गई है।

इस तरह जब उनके मन में ही, आत्मा में ही कोई ग्रन्थि (गाँठ) नहीं रही तो तन पर वस्त्र की गाँठ कैसे लगी रह सकती है। अतः जैनसाधु दिगम्बर ही होते हैं। **(क्रमशः)**

हार्दिक बधाई

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की स्नातक **अनुभूति शास्त्री** एवं **निधि शास्त्री** को जैनदर्शन से आचार्य एवं ध्रुवधाम की छात्रा **विपाशा शास्त्री** को संस्कृत साहित्य से आचार्य करने पर दिल्ली में आयोजित दीक्षांत समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्री एवं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

१ जनवरी, २०२० से ३१ दिसम्बर, २०२० तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४६-२५४७ : विक्रम सं. २०७६-७७

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मास →	पौष १ से १० जन.		माघ ११ जनवरी से ९ फरवरी				फाल्गुन १० फरवरी से ९ मार्च				चैत्र १० मार्च से ८ अप्रैल				वैशाख ८ अप्रैल से ७ मई				ज्येष्ठ ८ मई से ५ जून				आषाढ़ ६ जून से ५ जुलाई				श्रावण ६ जुलाई से ३ अगस्त				भाद्रपद ४ अगस्त से २ सितम्बर				प्रथम आश्विन ३ सितम्बर से १ अक्टू.				द्वितीय आश्विन २ अक्टूबर से ३१ अक्टू.				कार्तिक १ नवम्बर से ३० नवम्बर				मार्गशीर्ष १ दिसम्बर से ३० दिसम्बर				पौष ३१ दिसम्बर	
पक्ष →	शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा			११	श	२५	श	१०	सो×	२४	सो	१०	मं	२५	बु	८	बु	२४	शु	८	शु	२३	श	६	श	२२	सो	६*	सो×	२१	मं	४	मं	१९	बु	३	गु	१८	शु	२	शु	१७	श	१ नवम्बर	र	१६	सो×	१ दिसम्बर	मं	१५	मं	३१	गु
द्वितीया			१२	र	२६	र	१०	सो	२५	मं	११	बु	२६	गु	९	गु	२५	श*	९	श	२४	र	७	र	२३	मं	६	सो	२२	बु	५	बु	२०	गु	४	शु	१९	श	३	श	१८	र	२	सो	१६	सो	२	बु	१६	बु		
तृतीया			१३	सो	२७	सो	११	मं	२६	बु	१२	गु	२७	शु	१०	शु	२६	र*	१०	र×	२५	सो	८	सो	२४	बु	७	मं	२३	गु	६	गु	२१	शु	५	श	१९	श×	४ ५	र सो	१९	सो	३	मं	१७	मं	३	गु	१७	गु		
चतुर्थी			१४	मं	२८ २९	मं बु	१२	बु	२७	गु	१३	शु×	२८	श	११	श	२७	सो	१०	र	२६	मं	९	मं	२५	गु	८ ९	बु गु	२४	शु	७	शु	२२	श	६	र	२०	र	६	मं	२०	मं	४	बु	१८	बु	४	शु	१८	शु		
पंचमी			१५	बु	३०	गु	१३	गु	२८	शु	१३	शु	२९	र	१२	र	२८	मं	११	सो	२७	बु*	१०	बु	२५	गु×	१०	शु	२५	श	८	श	२३*	र	७	सो	२१	सो	७	बु	२१	बु×	५	गु	१९	गु	५	श	१९	श		
षष्ठी	जन. 2020 १	बु	१६	गु×	३१	शु	१४	शु	२९ मार्च १	श र	१४	श	३०	सो	१३	सो	२९	बु	१२	मं	२८	गु	११	गु	२६	शु	११	श	२६	र	९	र	२४	सो	८	मं	२२	मं	८	गु	२१	बु	६	शु	२०	शु	६	र	२०	र		
सप्तमी	२	गु	१६	गु	फरवरी १	श	१५	श	२	सो*	१५	र	३१	मं	१४	मं	३०	गु	१३	बु	२९	शु	१२	शु	२७	श	१२	र	२७*	सो×	१० ११	सो मं	२५	मं	९	बु	२३	बु	९	शु	२२	गु	७	श	२१	श	७	सो*	२१	सो		
अष्टमी	३	शु	१७	शु	२	र	१६	र	३	मं	१६	सो	अप्रैल १	बु	१५	बु	१	शु	मई १४ १५	गु शु	३०	श	१३	श	२८*	र	१३	सो	२७	सो	१२	बु	२६	बु	१०	गु	२४	गु	१०	श	२३	शु	८	र	२२	र	८	मं	२२	मं		
नवमी	४	श	१८	श	३	सो	१७	सो	४	बु	१७	मं*	२	गु	१६	गु	२	श	१६	श	३१	र	१४	र	२९	सो	१४	मं	२८	मं	१३	गु	२७*	गु	११	शु	२५	शु	११	र	२४	श	९	सो	२३	सो	९	बु	२३	बु		
दशमी	५	र	१९	र	४	मं	१८	मं	५	गु	१८	बु	३	शु	१७	शु	३	र	१७	र	जून १	सो	१५	सो	३०	मं	१५	बु	२९	बु	१४	शु	२८	शु	१२	श	२६	श	१२	सो	२५ २६	र सो	१०	मं	२४	मं	१०	गु	२४	गु		
एकादशी	६	सो	२०	सो	५	बु	१९	बु	६	शु	१९	गु	४	श	१८	श	४	सो×	१८	सो	२	मं	१६	मं	जुलाई १	बु	१६	गु	३०	गु	१५	श	२८	शु×	१३	र	२७	र	१३	मं	२७	मं	११	बु	२५	बु	११	शु	२५	शु		
द्वादशी	७	मं	२१	मं	६	गु*	२०	गु	७	श	२०	शु	५	र	१९	र	४	सो	१९	मं	३	बु	१७ १८	बु गु	२	गु	१७	शु	३१	शु	१६	र	२९	श	१४	सो	२८	सो	१४	बु	२८	बु	१२	गु	२६	गु	१२	श×	२६	श		
त्रयोदशी	८	बु	२२	बु	७	शु	२१	शु	७	श×	२१ २२	श र	६	सो*	२०	सो	५	मं	२०	बु	४	गु×	१९	शु	३	शु	१८	श	१	श	अगस्त १७	सो	३० ३१	र* सो	१५	मं	२९	मं	१५	गु×	२९	गु	१३	शु	२७ २८	शु श	१२	श	२७	र		
चतुर्दशी	९	गु	२३	गु*	८	श	२२	श	८	र	२३	सो	७	मं	२१	मं	६	बु	२१	गु	४	गु	२०	श	४	श	१९	र	२	र	१८	मं	सितम्बर १*	मं	१६	बु	३०	बु	१५	गु	३०	शु	१४	श	२९	र	१३	र	२८	सो		
पूर्णिमा/अमा.	१०	शु	२४	शु	९	र	२३	र	९	सो*	२४	मं	८	बु×	२२	बु	७	गु	२२	शु	५	शु	२१	र	५*	र	२०	सो	३	सो*	१९	बु×	२*	बु	१७	गु	अक्टूबर १	गु	१६	शु	३१	श	१५	र*	३०	सो	१४	सो	२९ ३०	मं बु		

जैन व्रत एवं पर्व :

ऋषभदेव निर्वाण दिवस – २३ जनवरी, २०२०
कविवर बनारसीदास जयन्ती – ६ फरवरी, २०२०
श्री ऋषभदेव जयन्ती – १७ मार्च, २०२०
अष्टान्हिका : (१) २ मार्च से ९ मार्च, २०२०
(२) २८ जून से ५ जुलाई, २०२०
(३) २२ नवम्बर से ३० नवम्बर, २०२०

श्री महावीर भगवान जयन्ती – ६ अप्रैल, २०२०
श्री कानजीस्वामी जयन्ती – २५ अप्रैल, २०२०
अक्षय तृतीया – २६ अप्रैल, २०२०
श्रुत पंचमी – २७ मई, २०२०
वीर शासन जयन्ती – ६ जुलाई, २०२०
मो. सप्तमी (पार्श्व. निर्वाण) – २७ जुलाई, २०२०

रक्षा बन्धन – ३ अगस्त, २०२०
सोलहकारण व्रत – ४ अगस्त से २ सितम्बर, २०२०
दशलक्षण व्रत – २३ अगस्त से २ सितम्बर, २०२०
पुष्पांजलि व्रत – २३ अगस्त से २७ अगस्त, २०२०
सुगन्ध दशमी – २८ अगस्त, २०२०
रत्नत्रय व्रत – ३० अगस्त से २ सितम्बर, २०२०

अनन्त चतुर्दशी – १ सितम्बर, २०२०
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) – १५ नवम्बर, २०२०
श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस – ७ दिसम्बर, २०२०
जयपुर पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव – २८ फरवरी से १ मार्च, २०२०

× तिथि क्षय * जैनव्रत एवं पर्व

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर – १७ मई से ३ जून, २०२० तक, -----
महाविद्यालय शिविर – १९ जुलाई से २८ जुलाई, २०२० तक, जयपुर
शिक्षण शिविर – १ नवम्बर से ८ नवम्बर, २०२० तक, जयपुर

प्रकाशचन्द जैन 'ज्योतिर्विद' मो. ९३५९९२३७७५
७३, लोहाई, मैनपुरी (उ.प्र.) के सौजन्य से, फोन : ०५६७२-२३४२२७

एवम्

अनुज जैन 'ज्योतिर्विद' मो. ९८३७७१३५९८
अलीगंज (उ.प्र.) के सौजन्य से

आखिर हम करें क्या?

5

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तत्त्वप्रदीपिका नामक संस्कृत टीका में आचार्य अमृतचन्द्र लिखते हैं -

''निर्वाणसंप्राप्ति हेतुभूतं वीतरागचारित्राख्यं साम्यमुपसंपद्ये -

निर्वाण प्राप्ति का हेतुभूत वीतरागचारित्र नाम से प्रसिद्ध साम्यभाव को प्राप्त करता हूँ।''

यह साम्यभाव ही समाधि है, शुद्धोपयोग है, ध्यान है आत्मलीनता है। जो कुछ है, सब कुछ यही है। हमें यही प्राप्त करना है।

यह साम्यभाव ही निश्चय रत्नत्रय है; सम्यग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान है, सम्यक्चारित्र है। इसे प्राप्त करना ही हमारा चरम लक्ष्य है।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के पहले पाँच लब्धियाँ होती हैं। (१) क्षयोपशमलब्धि (२) विशुद्धिलब्धि (३) देशनालब्धि (४) प्रायोग्यलब्धि और (५) करणलब्धि।

१. क्षयोपशमलब्धि - ज्ञान का इतना उघाड़ (व्यक्तता) होना कि आत्मा समझ में आ जाय। प्रत्येक सैनी पंचेन्द्रिय को ज्ञान का इतना उघाड़ होता है, इतना क्षयोपशम होता है कि आत्मा समझा जा सके। चारों गतियों के प्रत्येक पंचेन्द्रिय में इतना ज्ञान प्रगट होता है कि वह आत्मा को समझ सके।

२. विशुद्धिलब्धि - कषायों की ऐसी मन्दता कि जिसमें आत्मा को समझने की पात्रता जगे; सबकुछ छोड़कर एक आत्मा को जानने की तीव्र इच्छा हो।

यदि क्षयोपशमलब्धि नहीं होगी तो समझाने पर भी आत्मा **समझ में** नहीं आयेगा और यदि विशुद्धिलब्धि नहीं होगी तो वह आत्मा को **समझने** ही नहीं आवेगा।

मात्र '**समझ में**' और '**समझने**' का ही अन्तर है; क्योंकि ज्ञान के उघाड़ बिना **समझ में** नहीं आयेगा और कषाय की मन्दता के बिना **समझने** नहीं आयेगा। तात्पर्य यह है कि वह विषय-कषाय में इतना उलझा होगा कि उसे समझने आने की फुरसत ही नहीं मिलेगी।

३. देशनालब्धि - आत्मा को समझने योग्य ज्ञान का उघाड़ और विषय-कषाय छोड़कर आत्मा को समझने की तीव्र जिज्ञासा हो और फिर आत्मा को जानने वाले सद्गुरु का समागम प्राप्त हो तो आत्मा का सही स्वरूप समझ में आने की बात बन सकती है।

जिस आत्मा का ध्यान करना है, अनुभव करना है; उसे समझाने में कुशल ज्ञानी गुरु के समझाने पर यदि हम प्रयत्न करें तो विकल्पात्मक ज्ञान में आत्मा का सच्चा स्वरूप समझ में आ सकता है।

आत्मानुभव या आत्मध्यान करने के लिये सबसे पहले जिनागम और सद्गुरु के माध्यम से विकल्पात्मक ज्ञान में आत्मा का स्वरूप स्पष्ट होना चाहिये।

उक्त तीनों लब्धियों की चर्चा करते हुये मैंने विनयपाठ में लिखा है; जो इसप्रकार हैं -

जिनवाणी के मर्म को अरे जानने योग्य।
ज्ञान प्रगट पर्याय में होवे सहज संयोग[1]।। ११ ।।

और कषायें मन्द हों भाव रहें निष्काम।
एक आतमा में लगे छोड़ हजारों काम[2]।। १२ ।।

देव-गुरु संयोग या जिनवाणी के योग।
तत्व श्रवण में मन लगे और न मन में रोग[3]।। १३ ।।

अरे क्षयोपशम विशुद्धि और देशना लब्धि।
जिसके ये तीनों बने उसे तत्त्व उपलब्धि।। १४ ।।[4]

भले ही ज्ञान का इतना क्षयोपशम हो कि आत्मा समझ में आ सकता है; पर कषायें तीव्र हो, विषय-कषाय की अति प्रगाढ़ रुचि हो तो वह आत्मा के समझने के लिये समय ही नहीं निकालता।

यदि हजारों काम छोड़कर एक आत्मा को समझने की रुचि हो तो काम बन सकता है। एक आत्मा को समझने की ऐसी धुन लगी हो कि हर कीमत पर आत्मा को समझने का

---

१. क्षयोपशम लब्धि २. विशुद्धि लब्धि ३. देशना लब्धि
४. द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान विनय पाठ - पृष्ठ - १९

भाव हो; मन में कोई और व्यसन न हो, राग न हो, आदत न हो; क्योंकि ये सब एक प्रकार से मन के रोग ही हैं।

ज्ञान के क्षयोपशम की और मन की विशुद्धि की ऐसी स्थिति हो और सद्गुरु का समागम प्राप्त हो जाय, सत्शास्त्रों का श्रवण, पठन, मनन, चिन्तवन हो तो आत्मा समझ में आ सकता है।

आगम, गुरु और युक्तियों के निमित्त से विकल्पात्मक ज्ञान में आत्मा का स्वरूप स्पष्ट हो जाना अनुभूति के पहले आवश्यक है।

यह सब स्वाध्यायरूप व्यवहार धर्म में सम्पन्न होता है। इसमें स्वाध्याय करना, चर्चा करना और चिन्तन-मनन करना सब कुछ होता है; पर करणलब्धिरूप ध्यान में, शुद्धोपयोगरूप ध्यान में न तो कुछ बोलना होता है, न कुछ सोचना होता है और न कुछ करना होता है। **(क्रमशः)**

अर्हं पाठशाला की परीक्षा में स्थान प्राप्त विद्यार्थी

बेसिक जूनियर बैच

दीया जैन (प्रथम स्थान) | एनी जैन (द्वितीय स्थान) | उपशम चौधरी (तृतीय स्थान) | परिणति जैन (तृतीय स्थान) | सिद्धांश जैन (तृतीय स्थान)

बेसिक सीनियर बैच

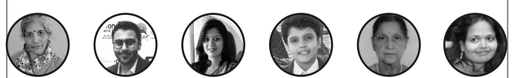

मधु बगरा (प्रथम स्थान) | हर्ष जैन (प्रथम स्थान) | अपूर्वा जैन (द्वितीय स्थान) | नवीन बड़जात्या (द्वितीय स्थान) | पुष्पा जैन (तृतीय स्थान) | आभा जैन (तृतीय स्थान)

बेसिक फिजीकल बैच

नेहा लुहाड़िया (प्रथम स्थान) | पारुल शाह (प्रथम स्थान) | रानी लुहाड़िया (द्वितीय स्थान) | प्रियंका चौधरी (द्वितीय स्थान) | रूपम लुहाड़िया (तृतीय स्थान) | श्रद्धा कटारिया (तृतीय स्थान)

इंटरमीडिएट बैच

प्रतिभा जैन (प्रथम) | राजीव जैन (द्वितीय) | नेहा जैन (तृतीय) | वीना दोशी (तृतीय)

रविवारीय गोष्ठियाँ संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर की पावन प्रेरणा से आत्मायतन ग्वालियर में नवनिर्मित श्री समयसार विद्यानिकेतन में दिनांक 28 जुलाई को **नवम्** रविवारीय गोष्ठी **सप्त व्यसन** विषय पर संपन्न हुई।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री अनंतजी जैन ग्वालियर, मुख्य अतिथि श्री महेशचंदजी जैन जनकगंज एवं विशिष्ट अतिथि श्री जिनेन्द्रजी जैन किलागेट थे। विद्वत्गणों में पण्डित महेशजी किलागेट एवं पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री ग्वालियर उपस्थित थे।

मंगलाचरण शाश्वत जैन ने, संयोजन आकिंचन जैन खनियांधाना व आदि जैन टीकमगढ ने एवं संचालन प्रवीणजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 4 अगस्त को **दशम्** रविवारीय गोष्ठी **सात तत्त्व** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी जैन गणेश कॉलोनी, मुख्य अतिथि श्री उदयकिशोरजी जैन एडवोकेट एवं विशिष्ट अतिथि श्री दिनेशजी जैन (कांग्रेस नेता), श्री विमलजी जैन विजयवर्गीय एवं श्री पुरुषोत्तम जैन किलागेट थे। विद्वत्गणों में पण्डित महेशजी जैन, पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री ग्वालियर एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री उपस्थित थे। मंगलाचरण अचल जैन पोरसा ने एवं संचालन प्रवीणजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 25 अगस्त को **बारहवीं** रविवारीय गोष्ठी **लघु कथा प्रतियोगिता** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष अशोककुमारजी जैन ग्वालियर, मुख्य अतिथि इंजी. स्वदेशजी जैन ग्वालियर एवं विशिष्ट अतिथि ओमप्रकाशजी जैन व पाण्डेयजी ग्वालियर थे। विद्वत्गणों में पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री ग्वालियर एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री उपस्थित थे। मंगलाचरण समकित जैन ने, संचालन पण्डित प्रवीण शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ने किया।

शोक समाचार

खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती कुसुम जैन ध.प. स्व.श्री कोमलचंदजी जैन देदामूरी (ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री की बहन) का दिनांक 6 अगस्त को जिनागम के अभ्यासपूर्वक व समताभावपूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

3 से 12 सितम्बर	दिल्ली (विश्वास नगर)	दशलक्षण महापर्व
13 से 20 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
25 से 29 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
1 से 3 नवम्बर	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
4 से 12 नवम्बर	कलकत्ता	अष्टाह्निका महापर्व

ज्ञानगोष्ठियाँ संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण कुलभूषण छात्रावास की **षष्ठम्** ज्ञानगोष्ठी दिनांक 28 जुलाई को **पंच परमेष्ठी : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री विजयकुमारजी जैन (हाथरस वाले) मुम्बई एवं मुख्य अतिथि श्री सुमेरचंदजी बेलोकर थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री कुलभूषणजी जैन एवं श्रीमती कंचन जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान अक्षत जैन बुलढाणा ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण प्रतीक जैन एवं संचालन दर्शन जैन व ऋषिकेश जैन ने किया। आभार प्रदर्शन श्री कुलभूषणजी जैन ने किया।

● दिनांक 5 अगस्त को **सप्तम्** ज्ञानगोष्ठी **चार गति : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री अक्षयजी जोगी हराल-वाशिम थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री कुलभूषणजी जैन, श्री लालचंदजी सातपुते, श्री ओमप्रकाशजी जोगी, श्रीमती किशोरीताई सातपुते एवं श्रीमती कंचन जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान परिमल जैन ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण सिद्धेश जैन एवं संचालन प्रतीक जैन व अनुराग जैन ने किया। आभार प्रदर्शन श्री लालचंदजी सातपुते ने किया।

● दिनांक 11 अगस्त को **अष्टम्** ज्ञानगोष्ठी **छह द्रव्य : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अविनाशजी शास्त्री (संस्कृत शिक्षक) थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री कुलभूषणजी जैन, श्री लालचंदजी सातपुते, श्रीमती पुष्पाजी जैन, श्रीमती सुमतनजी बुबने एवं श्रीमती कंचन जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान प्रतीक जैन ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण परिमल जैन एवं संचालन अक्षद जैन व निशांत जैन ने किया। आभार प्रदर्शन श्री कुलभूषणजी जैन ने किया।

● दिनांक 18 अगस्त को **नवम्** ज्ञानगोष्ठी **सात तत्त्व : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री सचिनजी फुरसुले पुणे एवं मुख्य अतिथि श्री नितिनजी सावरकर व श्रीमती रोशनी सावरकर पुणे थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री प्रशांतजी जैन शिरपुर, श्री कुलभूषणजी जैन एवं श्रीमती कंचन जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान निशांत जैन ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण वेदांत जैन एवं संचालन पार्श्व जैन व सिद्धेश जैन ने किया। आभार प्रदर्शन श्री कुलभूषणजी जैन ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 जुलाई को **अहिंसा : एक दार्शनिक परिशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित संजयजी सेठी, जयपुर थे। मुख्य अतिथि पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर व विशिष्ट अतिथि डॉ. एन. के खींचा जयपुर (रिटायर्ड आर.ए.एस. ऑफिसर) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमन जैन खनियांधाना (उपाध्याय वर्ग) व प्रतीक जैन हेरावत (शास्त्री वर्ग) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण मोहित जैन फुटेरा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सहज जैन पिड़ावा और सचिन जैन फिरोजाबाद ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

ज्ञातव्य है कि पूर्व में संपन्न वीरशासन जयंती गोष्ठी पर 56 छात्रों ने लेख, निबंध, कविता, चित्र आदि जमा किये थे, उन्हें भी अतिथियों के करकमलों से पुरस्कृत किया गया।

● दिनांक 18 अगस्त को **पंच लब्धि : स्वरूप एवं चिन्तन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में ऋषभ उपाध्ये बेलगांव (शास्त्री प्रथमवर्ष) एवं शुभांशु जैन जबलपुर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण एकाग्र जैन पिड़ावा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन तृतीय वर्ष के अरिहंत जैन भिण्ड एवं शैलेष बेलोकर परभणी ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 25 अगस्त को **संपूज्यामि दशलक्षणमेकम्** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर उपस्थित थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में संदेश जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं आयुष जैन जबलपुर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण ए. पद्मराज चेन्नई (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन तृतीय वर्ष के स्वप्निल जैन सिवनी एवं मयंक जैन लखनादौन ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com